एकाम्र पुराण में शिवतत्त्व

यह पुराण काशी माहात्म्य, गया महात्म्य तथा नेपाल माहात्म्य इत्यादि जैसे ग्रन्थों की भाँति अपने नाम के अनुसार 'एकाम्रक्षेत्र' (वर्तमान भुवनेश्वर के आस-पास का क्षेत्र) के महत्त्व की चर्चा से परिपूर्ण है। इसे एक शैवउपपुराण माना जाता है। यह पुराण मूलतः उड़िया लिपि में होने के कारण (तथा जिसका आलोचनात्मक संस्करण देवनागरी लिपि में लगभग 13 वर्ष पूर्व ही प्रकाशित हुआ था) विद्वानों द्वारा पर्याप्त चर्चा का विषय नहीं बन सका है। यह उड़ीसा के प्राचीनतम ग्रन्थों में से एक है। एकाम्रक्षेत्र की महिमा ब्रह्मपुराण (अध्याय 41) में भी गायी गयी है। वहाँ इस क्षेत्र के नामकरण का कारण भी बताया गया है। जैसे नीलमत पुराण (एक कश्मीरी पुराण) कश्मीर की धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्परा को बताता है, उसी प्रकार एकाम्र पुराण उड़ीसा के शैवस्थल एकाम्रक्षेत्र का वर्णन करता है। इसमें 70 अध्याय पाँच अंश एवं लगभग 6000 श्लोक हैं।

भगवान् शिव का स्वरूप

इस पुराण में भगवान् शिव को परमतत्त्व स्वीकार करते हुए उनके सगुण एवं निर्गुण दोनों रूपों का वर्णन किया गया है। उन्हें देवदेव एवं परमात्मा (1/29) कहा गया है। वे जटा तथा शशीकला से युक्त, त्रिलोचन, नागेन्द्र से सुशोभित भालवाले, चिताभस्म विभूषित (1/42-43), सदसदात्मक, पंचवक्त्र तथा व्याघ्रचर्मधारी हैं (1/53-54)। वे सृष्टि, स्थिति एवं संहार के कारण हैं तथा उनका दर्शन अद्भुत है जो पाप का नाश करनेवाला तथा शिवलोक प्रदान करनेवाला है। उन महादेव के माहात्म्य का ज्ञान किसी को भी नहीं है।

सर्गस्थित्यन्तसंहारभूतमद्भुतदर्शनम्।
सर्वपापक्षयकरं शिवलोक-प्रदायकम्।।
तस्य देवस्य माहात्म्यं न च कोऽपि प्रकाशितम्। (एकाम्र पुराण 2/10-11)

भगवान् शिव की वन्दना देवता, मुनि आदि करते हैं; वे अतिकृपालु, पिनाकी, शूल, यष्टि आदि धारण करनेवाले, तीनों भुवन का मंगल करनेवाले, संसार के भय से मुक्त करनेवाले, पार्वती को आधे-अंग में धारण करनेवाले, स्फटिक के समान, बल से युक्त तरुण शरीरवाले तथा भूतपति हैं (एका. पु. 2/12)।

पार्वती शिव की वंदना करते हुए उन्हें अनादि, मध्य-अन्त से रहित, विभु, सर्ग, स्थिति एवं अन्तकर्त्ता, त्रिमूर्तिस्वरूप (अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु एवं रुद्र स्वरूप), सांख्य-योगस्वरूप, योगतत्त्वार्थ के ज्ञाता, अखिलमूर्ति, सर्वग, सर्वव्यापी, महेश्वर, सर्वज्ञानमय, सर्वात्मा, अव्यय कारण, विश्वेश्वर, जगत् का धाता, मूर्त एवं अमूर्त, स्थूल एवं सूक्ष्म से परे, शान्त, अनाख्येय, असंख्य, परमब्रह्म, सनातन, निर्गुण, सगुण, योगियों द्वारा ध्येय, वरेण्य, वर देनेवाले तथा भक्तवत्सल आदि कहा है। (एकाम्र पु. 2/38-43)।

जयत्वादि अनादिश्च मध्यान्तरहितो विभुः।
सर्गस्थित्यन्तकर्त्रे च त्रयीमूर्तिमते नमः।।
असंख्येयस्त्वनाख्येयः परं ब्रह्म सनातनः।
निर्गुणो गुणवांश्चासि योगिध्येय नमोऽस्तु ते।। (एकाम्र पु. 2/38, 42)

अर्थात्-सबके आदि, अनादि, मध्य एवं अन्त से रहित, विभु भगवान् शिव की जय हो। सृष्टि, स्थिति एवं अन्तकर्त्ता तथा त्रिमूर्तिस्वरूप शिव को नमस्कार। असंख्य, अनिर्वचनीय, परमब्रह्म, सनातन, निर्गुण, सगुण तथा योगियों के ध्येय भगवान् शिव को नमस्कार है।

भगवान् शिव को जगत्पति तथा देवदेव कहा गया है (3/33)। उन्हें एक, भूतात्मा, योगमूर्ति तथा योग-क्षेम का प्रवर्तक, सृष्टि का हेतु तथा निरञ्जन कहा गया है (3/37-38)। उन्हें शंख, कुन्द तथा चन्द्रमा के समान उज्जवल तथा शुद्ध स्फटिक की तरह निर्मल, परम, ईशान, दिगम्बर, नागों का यज्ञोपवीत धारण करनेवाले, अहिभूषण को धारण करनेवाले, विश्वमूर्ति, पिनाक, शूल, शक्ति तथा जटा आदि को धारण करनेवाले, त्रिलोचन, भूतात्मा, वन्द्य, विश्वाधार, ईश्वर, विभु, सहस्त्र शिर, मुख तथा आँखोंवाले तथा रुद्राक्षमालाधारी आदि कहा गया है (एका. पु. 3/50-58)।

ब्रह्माजी ने अपनी स्तुति में एक स्थलपर शिव को आदि, अनादि, जन्म, मृत्यु तथा जरारहित, विश्वयोनि, अयोनिज, कर्त्ता, भर्त्ता, हर्त्ता, अव्यय, अक्षय, अविभक्त, जगद्बीज, अनन्त, जगदाधार, ईश्वर, परमेष्ठिन, अपार, परमेश्वर, अप्रमेय, आदि-अन्तरहित, बहुरूप, स्वयंभू, द्वन्द्व एवं मोह को शान्त करनेवाले आदि कहा है (एका. पु. 3/62-68)।

एक अन्य स्थलपर वे अपनी स्तुति में शिव को आदिप्रकृति, अव्यक्त, अचिन्त्य, अनाश्रय, अनाधार, निरपेक्ष, ॐकार, वषट्कार, होता, अध्वर्यु, अप्रमेय, धर्म, काम, अर्थ एवं मोक्षदाता, लोकसाक्षी, हृदय में स्थित, विश्व को मुक्ति प्रदान करनेवाले, प्रभु, गंगाधर, वरेण्य, वरदाता, ब्रह्मा, विष्णु एवं शिवात्मक, भवभीतिहर, देवों के दुःखों के नाशक, भक्तवत्सल, पुराणपुरुष, ब्रह्म, बहुरूप, नीलकण्ठ, सनातन परंब्रह्म, हेयाहेय विनिर्मुक्त, निर्वाणरूप, निष्प्रपंच तथा आर्तो के शरण आदि कहा है। शिवजी की तृप्ति से सभी देवों की तृप्ति हो जाती है (एका. पु. 4/58-83)। स्तुति के कुछ अंशों को देखें-

अनाश्रय त्वनाधार निरपेक्ष गतज्वर।।
ॐकारस्त्वं वषट्कार...।
धर्मार्थकामदानाय मुमुक्षोर्मोक्षदायिने।
सर्गस्थित्यन्तकर्त्रे च लोकसाक्षी हृदि स्थितः ।।
पुराणपुरुषं नित्यं त्वामाहुर्ब्रह्मवादिनः ।
नीलकण्ठं नमस्यामि नमः...............................।
..परं ब्रह्म सनातन।।

आर्त्तानां शरणं देव आश्रितानां च केवलम्।।

(एकाम्र पु. 4/60-61, 64, 76, 78, 83)

अर्थात्- आप(शिव) अनाश्रय, अनाधार, निरपेक्ष एवं ज्वररहित हैं। आप ही ओंकार एवं वषट्कार हैं.........। आप धर्म, अर्थ और काम को प्रदान करनेवाले तथा मुमुक्षुओं को मोक्ष देनेवाले, सृष्टि, स्थिति एवं प्रलय करनेवाले, लोकसाक्षी तथा हृदय में स्थित रहनेवाले हैं। आप को ब्रह्मवादी लोग पुराणपुरुष एवं नित्य कहते हैं। आप नीलकण्ठ को नमस्कार है ....सनातन परंब्रह्म को नमस्कार है। हे देव आप आर्त जनों एवं निर्भर रहनेवालें के एकमात्र शरण हैं।

भगवान् शिव अशरण्यों के शरण, संसार के भय को हरनेवाले, सभी नामों एवं रूपों को धारण करनेवाले, अमृतदायी, परमब्रह्म, सच्चिदनन्दविग्रह तथा चित्स्वरूप आदि हैं।

नमः सर्वाय................ सर्वरूपधराय च।
भवोद्भवाय देवाय सर्वनाम्ने नमो नमः।।
नमस्त्रिगुणवाह्याय शिवायामृतदायिने।
परं ब्रह्म नमस्तेऽस्तु सच्चिदानन्दविग्रह।। (एकाम्र पु. 4/105, 107)

अर्थात्- सभी नाम एवं रूप को धारण करनेवाले तथा जगत् की उत्पत्ति के हेतु भगवान् शिव को नमस्कार है। त्रिगुण से परे, कल्याणकारी, अमृत प्रदान करनेवाले, परंब्रह्म तथा सच्चिदानन्दविग्रह भगवान् शिव को नमस्कार है।

एक स्थलपर कहा गया है कि शंकर जी से श्रेष्ठ न कोई देवता है, न कोई गुरु और न कोई उनसे ज्यादा पवित्र है। ऐसे भगवान् शिव को नमस्कार है।

न शङ्करादस्त्यपरो हि देवो न शङ्करादस्त्यपरो गुरुर्नः।
न शङ्करादस्त्यपरं पवित्रं नमोऽस्तु तस्मै वृषभध्वजाय।। (एकाम्र पु. 5/26)

वहीं पर भगवान् शिव को सभी देवों का ईश, वर देनेवाले, विभु, चराचर का आधार, आदि प्रकृति, अचिन्त्य, शाश्वत, अनादि, पुराण-पुरुष, मुमुक्षुओं द्वारा सेवित, लोगों के बन्धनों को दूर करनेवाले, कर्त्ता, धर्त्ता, हर्त्ता, देवादिदेव, परम एवं वन्द्य आदि विशेषणों से विभूषित किया गया है(एकाम्र पु. 5/25, 27-29)। उन्हें निरञ्जन, निरामय, देवों द्वारा अज्ञेय तथा ज्ञानार्णव आदि भी कहा गया है(एकाम्र पु. 5/57-58)। उन्हें सर्वज्ञ, सर्वकर्त्ता, सभी लोकों द्वारा नमस्कृत, सर्वेश्वर, दिव्य चैतन्य, शाश्वत, ध्रुव, अव्यय, निर्विकार, निराभास, शब्द-ब्रह्म तथा गुह्य आदि कहा गया है(एकाम्र पु. 11/25-27)।

सर्वज्ञं सर्वकर्त्तारं सर्वलोकनमस्कृतम्।
सर्वेश्वरम्............................विभुम्।।
...........................शाश्वतं ध्रुवमव्ययम्।

निर्विकारं निराभासं.........................।।
शब्दब्रह्मेति गुह्यं च यं प्राहुर्मुनयः सदा। (एका. पु. 11/25-27)

उन्हें परमज्योति, परमधाम, अमृत, शाश्वत, ध्रुव, ध्यानगम्य, परमब्रह्म तथा योगियों द्वारा दृश्य कहा गया है।

परं ज्योतिः परं धाम अमृतं शाश्वतं ध्रुवम्।
ध्यानगम्यं परं ब्रह्म यं वै पश्यन्ति योगिनः।। (एकाम्र पु. 12/74)

ब्रह्माजी एक अन्य स्थलपर भगवान् शिव के साकार विग्रह का वर्णन करते हुए कहते हैं कि वे दूध, कुन्द के फूल अथवा शंख के समान वर्णवाले, शुद्ध स्फटिक की तरह निर्मल, भस्मविभूषित तथा व्याघ्रचर्म धारण किये हुए हैं। आठों हाथों में क्रमशः पिनाक, त्रिशूल, परशु, डमरू, वर, अभय आदि को धारण किये हुए हैं। वासुकि नाग का यज्ञोपवीत, जटा में तक्षक तथा हाथ में कर्कोटक(नाग) को धारण किये हुए हैं। गंगा एवं चन्द्रमा को मस्तक पर धारण किये रहते हैं। वे तीन नेत्रवाले तथा मणि आदि श्रेष्ठ दस नागों को अपने कटि आदि में धारण किये हुए रहते हैं(एकाम्र पु. 13/6-15)।

भगवान् शिव ब्रह्माजी से कहते हैं कि "मेरा माहात्म्य सुर एवं असुर सभी के लिये दुर्विज्ञेय है, सिद्ध तथा गन्धर्व आदि लोगों के लिये सैकड़ों करोड़ कल्प में भी मेरे माहात्म्य का ज्ञान नहीं हो सकता।"

माहात्म्यं मम भो ब्रह्मन्! दुर्विज्ञेयं सुरासुरैः।
अन्यैश्च सिद्धगन्धर्वैः कल्पकोटिशतैरपि।। (एकाम्र पु. 13/23)

ब्रह्माजी अन्यत्र भगवान् शिव की स्तुति में पूर्व के विशेषणों को दुहराते हुए भगवान् शिव को अक्षर, शाश्वत, तम से परे, ज्योतिर्मय, दिव्य, अनुपमेय, अनादि, ईश, वरेण्य, श्रेष्ठ, चराचरविश्व, विष्णु तथा ब्रह्मा को पैदा करनेवाले, त्रिगुणातीत, विष्णु तथा रुद्ररूप से जगत् का पालन एवं संहार करनेवाले, आदि देव तथा सबको वर देनेवाले कहा है(एकाम्र पु. 13/42-48)।

देवगण भगवान् शिव की स्तुति में उन्हें परमानंद, सनातन, भूतभव्य, प्रभु, निष्कल, अप्रमेय, अक्षर, अव्यक्त, निर्गुण, भक्तवत्सल, अतीत-अनागत-ज्ञान के सिन्धु तथा योगियों के ध्येय आदि विशेषणों से विभूषित करते हैं(एका. पु. 18/52-57)।

भगवान् वासुदेव शिवजी की स्तुति में उन्हें परमेश्वर, त्रैलोक्यबीज, शाश्वत, निर्वाण के हेतु, संसारबन्धन से मुक्त करनेवाले, भूताधिपति, स्थिति, उद्भव एवं प्रलय के हेतु, नित्य, विकाररहित, शुद्ध, सुरात्मा, दुस्तर संसार-सागर से तारनेवाले, मोह-प्रपंच के रचनेवाले, भक्तिप्रिय, वर देनेवाले, जगन्मय, देव-असुर आदि को वर देनेवाले, विश्वात्मा, ब्रह्मा एवं अच्युत(भगवान् विष्णु) के ईश, सभी के द्वारा अर्चित, ब्रह्मा, विष्णु, तथा इन्द्र द्वारा सेवित, परमब्रह्म, मन्त्रों में श्रेष्ठ षडक्षर, दुःखों को हरनेवाले, भक्तों को अभय प्रदान करने वाले, योगियों के ध्येय, निर्मल, परम शान्त, शुभ ध्येय तथा

मनस्वरूप कहा है (एकाम्र पु. 18/60-80)।

भगवान् शिव को एक जगह स्पष्टरूप से वरेण्य, वर देनेवाले, सबके प्रपितामह तथा सनातन परंब्रह्म कहा गया है।

वरेण्यो वरदः शम्भुः सर्वेषां प्रपितामहः।।

वेदान्ते गीयते यच्च परंब्रह्मं सनातनम्। (एकाम्र पु. 31/47-48)

हिरण्यकशिपु ने भगवान् शिव को जगद्गुरु, अव्यय, मोक्ष का कारण, अनादि, स्थूल एवं सूक्ष्म सभी रूपों को धारण करनेवाले, परमेश्वर, जगत्कर्त्ता, भक्तवत्सल, परमानन्द तथा सच्चिदानन्दविग्रह कहा है (एकाम्र पु. 32/77, 88-90)।

नमस्ते भगवान्! तुभ्यं नमस्ते भक्तवत्सल!।

नमस्ते परमानन्द! सच्चिदानन्दविग्रह!।। (एकाम्र पु. 32/90)

एक अन्य स्थलपर देवगणों ने भगवान् शिव की स्तुति करते हुए उपरोक्त सभी विशेषणों को लगभग दुहराते हुए भगवान् शिव को जगत् के आदि, जगत् के आधार, अनादि, ईश्वर, जगत्कर्त्ता, जगत् के आनंद को बढ़ानेवाले, स्वर्ग एवं अपवर्ग प्रदाता, निःशेष, तत्त्वस्वरूप, निराभास, निरन्तर, निर्गुण, नित्य, सदसदात्मक, परात्पर, परमेष्ठी, परित्राता, पवित्र, परम, स्त्रष्टा, भूतपति, विधाता, संहर्त्ता, अनन्त, अनघ, अप्रमेय, अगोचर, नीलकण्ठ, ॐकार, प्रणव, यज्ञरूप, सर्वात्मा, असंख्येय, अपार, विज्ञानगुणसम्पन्न, ज्ञान-सागर, कूटस्थ, पंचब्रह्मस्वरूप (ईशान, तत्पुरुष, अघोर, सद्योजात तथा वामदेव), सभी देवों से श्रेष्ठ एवं वरिष्ठ, माया-मोह करनेवाले, मंगल के धाम तथा स्मरणमात्र से पाप का नाश करनेवाले कहा है (एकाम्र पु. 33/17-46)।

निःशेषस्तत्त्वरूपस्त्वं निराभासो निरन्तरः।

निर्गुणो..................नित्यः सदसदात्मकः ।।

ॐकारः प्रणवो वेदा यज्ञरूपिंश्च ते नमः।

नमः सर्वात्मने तुभ्यं भूतभव्य भवत् प्रभो।।

कूटस्थवाच्यो यः साक्षात् पञ्चब्रह्म नमोऽस्तु ते। (एकाम्र पु. 33/19, 37, 39)

अर्थात्- आप निःशेष, तत्त्वस्वरूप, निराभास, निरन्तर, निर्गुण, नित्य एंव सदसदात्मक हैं। ॐकार, प्रणव, वेद एवं यज्ञरूप को नमस्कार। आप सर्वात्मा एवं भूतभव्य प्रभु को नमस्कार है। कूटस्थ और साक्षात् पंचब्रह्म-स्वरूप शिव को नमस्कार है।

ब्रह्माजी आठ श्लोकों में एक स्तुति अष्टक की रचनाकर भगवान् शिव की विशेषताओं को बताते हैं। इन विशेषताओं में वे ऊपर के ही सभी विशेषणों का प्रयोग थोड़ी भाषा की भिन्नता से करते हैं। इस प्रसिद्ध अष्टक में वे शिव को अशेष, जगत्पूज्य, लोकवरप्रद, अचिन्त्य, जगत् के धाम, पुरुषेश्वर, जन्म, मृत्यु तथा जरा से रहित, शब्द, रस, स्पर्श आदि से अतीत, निर्गुण, भूतात्मा, जगद्गुरु,

ब्रह्मा तथा इन्द्र द्वारा वन्द्य, योगेश्वरेश्वर, पंचानन, विभूतिभूषित, नागेन्द्रहार को धारण करनेवाले, ताप-त्रय से पीड़ित जनों के रक्षक, नृत्यविशारद, सर्वात्मा, सर्वगत, सर्वेश्वर, सर्वगुणाश्रय, विभु, भवबन्धमोचक, योगविद, पुरातन, इन्द्रादि द्वारा सतत अर्चित आदि कहा है।(एकाम्र पु. 39/29-39)

भगवान् शिव को प्रणव एवं परम ब्रह्म बताते हुए कहा गया है कि उन्हीं से वेद भी उत्पन्न हुए हैं। अकार स्वयं ब्रह्मा, उकार विष्णु तथा मकार साक्षात् परब्रह्म शिव कहा गया है।

प्रणवः परमं ब्रह्म वेदादौ समजायते।।
अकारश्च स्वयं ब्रह्मा उकारो विष्णुरुच्यते।
मकारस्तु अहं साक्षात् परं ब्रह्मोच्यते द्विजाः।। (एकाम्र पु. 47/91, 93)

जटेश्वर महादेव के सन्दर्भ में बताते हुए कहा गया है कि 'जटिल मुनि' की स्तुति से भगवान् शिव लिंग में प्रकट हो गये। तभी से वह लिंग जटिलेश्वर के रूप में प्रचलित हो गया। वहाँ पर वे भी अपनी स्तुति में शिव के उपरोक्त विशेषणों का ही प्रयोग करते हैं। वे शिव को जगन्नाथ, विधाता, स्वयंभू, भूतेश, अव्यय, ईश्वर, कर्म के कारण, संहर्त्ता, धाता, सभी कारणों के कारण, अविच्छिन्न, अविज्ञेय, स्थूल एवं सूक्ष्म, सर्वत्र गमन करनेवाले, सभी कुछ प्रदान करनेवाले, अतिन्द्रिय, परतर, यज्ञ, यज्ञकर्त्ता, हव्यवाहक, शक्तिमय, विश्वमुख एवं विश्वपाद, अनाख्येय, अशोच्य, भूतों के दुःखों को हरनेवाले, निष्कल, सकल, विश्वात्मा तथा प्रपन्नार्तिहर आदि कहते हैं(एकाम्र पु. 57/22-32)।

इस पुराण के प्रमुख वक्ता ब्रह्माजी हैं। अतः वे इस पुराण में अनेक स्थलों पर शिव के बारे में चर्चा करते हुए उनकी अनेकों विशेषताओं का उल्लेख करते हैं। चातुर्मास विधान नामक 59 वें अध्याय में वे शिव की उपरोक्त अनेकों विशेषताओं की पुनः चर्चा करते हैं। वहाँपर उन्होंने शिव को स्थूल, सूक्ष्म, परम, शान्त, निर्वाण प्रदान करनेवाले, सभी कार्यों का कारण, शब्द-स्पर्शातीत, निष्प्रपंच, निराभास, सूक्ष्म, अव्यक्त, निर्गुण, सत्त्व-ज्योति, निरञ्जन, पूर्ण, अक्षोभ्य, अनघ, अतिन्द्रिय, एक, निष्कल, शुद्ध, व्योमातीत, परात्पर, अनन्त, अपरिच्छेद, विश्वारम्भ, एकाम्रक्षेत्र में कोटि मूर्ति धारण करनेवाले, विभु तथा देव-दैत्यों आदि द्वारा अर्चित कहा है।(एकाम्र पु. 59/4-12)

किसी प्रसंग में भीम भगवान् शिव की पूजा के बाद स्तुति करते हैं। उस स्तुति में उन्होंने शिवजी को जगन्नाथ, वरदायक, देवदेव, जगत्पति, निराकार, निर्गुण, महाप्रभु, भूतों के सुखकारक, ब्रह्मा-विष्णु-स्वरूप, सर्वज्ञानस्वरूप, सर्वार्थसाधक, अनन्त रूपवाले तथा करोड़ों ब्रह्माण्ड को धारण करनेवाले कहा है(एकाम्र पु. 61/32-37)।

शिवोपासना

जीवन के चार पुरुषार्थों-अर्थ, धर्म, काम एवं मोक्ष- की मान्यता हिन्दूधर्म एवं दर्शन में बहुप्रचलित है। भगवान् शिव को इन चारों पुरुषार्थों का दाता बताया गया है, अतः उनकी उपासना से ये चारों पुरुषार्थ व्यक्ति आसानी से प्राप्त कर सकता है।

इस पुराण में भगवान् शिव को पापों से मुक्ति दिलानेवाले(2/10; 14/32, 34, 45; 33/46; 44/45 इत्यादि), अति कृपालु(2/12 इत्यादि), भवभयहर(2/12; 4/35, 64, 66, 74, 104; 5/28; 14/36, 45; 18/63, 65; 20/47; 32/88; 33/20; 44/42, 45; 46/35, 43; 59/4, 65 इत्यादि), धर्म-अर्थदाता(4/64; 57/24 इत्यादि), तीनों लोकों(देवों तथा मनुष्यों आदि) के कल्याणकर्त्ता(2/12; 4/74; 18/73; 39/37; 46/30, 44; 57/28, 32 इत्यादि), दुखियों को शरण देनेवाले(4/83, 99 इत्यादि), भक्तवत्सल(2/43; 4/74; 18/57; 32/90; 46/29 इत्यादि), योग-क्षेम प्रवर्तक(3/37; 33/46; 61/36 इत्यादि), द्वन्द्व-मोह को शान्त करनेवाले(3/66 इत्यादि), स्वर्ग-अपवर्ग देने वाले (33/18 इत्यादि), जगत् के आनंद को बढ़ानेवाले(33/17; 61/33 इत्यादि), वरदाता(2/43; 4/72; 5/27; 13/54; 18/66, 68; 39/29; 61/32 इत्यादि), योगियों के ध्येय(18/77 इत्यादि) तथा वरण करने योग्य(2/43; 4/72; 5/27, 18/57 इत्यादि) कहा गया है। भगवान् शिव के इन गुणों के कारण उनकी उपासना का आकर्षण बढ़ जाता है।

पार्वतीजी कहती हैं कि जो लोग मुक्तिदायक भगवान् शिव के लिंग की सदा अर्चना करते हैं वे लोग शुद्ध एवं कृतकृत्य हैं तथा उनका देश पावन है। वहाँपर धर्म का निवास है, मनुष्य का वहाँ जन्म लेना सफल है। जहाँ की धरती लिंग से पूर्ण है वहाँ के पर्वत एवं पेड़-पौधे भी धन्य हैं।

ते देशाः पावनाः शुद्धास्तेजनाः कृतकृत्यकाः।
येऽर्च्चयन्ति सदा शम्भोर्लिङ्गं मुक्तिप्रदायकम्।।
तत्र धर्मः स्वयं साक्षात् सफलं जन्म वै नृणाम्।
गिरयश्च द्रुमा धन्या यत्र लिङ्गमयी रसा।। (एकाम्र पु. 3/6-7)

एक स्थलपर कहा गया है कि शिवजी की उपासना करनेवाले नरक में नहीं जाता।

अर्च्चयिष्ये विरूपाक्षं येन नो नरकं व्रजे। (एकाम्र पु. 9/53)

शंकर की आराधना नहीं करने से जीवन व्यर्थ हो जाता है। उनके प्रसन्न हो जानेपर भोग एवं मोक्ष दोनों प्राप्त हो जाते हैं। उसी की जिह्वा सफल है जो शिव की स्तुति करती है। शंकर की पूजा करनेवाले का बाहु धारण करना सफल है। जिसका मन शिव को अर्पित है उसी का तप सुतप है। जो शिव का दर्शन करता है उसके नेत्र सफल हैं।

नूनं व्यर्थगतं जन्म अनाराधितशङ्करम्।
कृत्तिवासे प्रसन्ने च भुक्तिमुक्तिश्च जायते।।
तस्यैव सफलां जिह्वा यस्येयं शिवसंस्तुतिः।
श्लाघ्यं बाह्वोर्धारणं तु यौ तु शंङ्करपूजकौ।।
सुतप्तं तु तपस्तेन यस्येशानेऽर्पितं मनः।

शिवस्य दर्शनं याभ्यां सफले ते दृशौ मते।। (एकाम्र पु. 20/47-49)

शिवार्चन से बढ़कर मुक्ति के लिये अन्य कोई धर्म नहीं है और न ही उससे अधिक पुण्य इस धरतीपर है।

श्रीशङ्कराच्र्चनादन्यो धर्मो नास्ति विमुक्तये।।
न शङ्कराच्र्चनात्पुण्यमधिकं पृथवीतले। (एकाम्र पु. 31/67, 69)

आगे कहा गया है कि इस पृथ्वी पर शिवजी की प्रसन्नता के अतिरिक्त अन्य कुछ भी साध्य नहीं है।

नास्त्यसाध्यः पृथिव्यां च प्रसन्ने कृत्तिवाससि (एकाम्र. पु. 31/70)

एक अन्य स्थलपर कहा गया है कि जो भावपूर्वक अव्यय भगवान् शिव की पूजा नहीं करता उसका जन्म एवं परिश्रम व्यर्थ है। भुजा उठाकर यह सत्य कहा जा रहा है कि शिव से श्रेष्ठ न कोई देव है न होगा।

व्यर्था जन्म भवेत्तेषां वृथा तेषां परिश्रमः।
यो न पूजति भावेन कृत्तिवाससमव्ययम्।।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं भुजमुधृत्य कथ्यते।
कृत्तिवासात् परो देवो न भूतो न भविष्यति।। (एकाम्र पु. 42/66, 69)

जो शिव का भजन करते हैं उनका पराभव नहीं होता।

ये भजन्ति विरूपाक्षं न ते यान्ति पराभवम।। (एकाम्र पु. 56/11)

भगवान् शिव को(स्पष्ट रूप से) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्रदान करनेवाले कहा गया है।

धर्मार्थकाममोक्षांश्च प्रयच्छन्ति सदाशिवः। (एकाम्र पु. 59/65)

भगवान् शिव की उपरोक्त विशेषतायें तथा इस पुराण के सन्दर्भ इस बात को स्पष्टरूप से प्रमाणित करते हैं कि भोग एवं मोक्ष के लिये, पापों-तापों के विनाश के लिये तथा समस्त कामनाओं की पूर्ति के लिये एकमात्र भगवान् शिव की शरण लेनी चाहिये। भगवान् शिव की अर्चना सभी-देव, दानव, मानव आदि-करते हैं। ब्रह्माजी सनत्कुमार से कहते हैं कि शिव की तुष्टि से हमें सर्वज्ञता तथा विष्णु को शक्ति प्राप्त हुई है।

सर्वज्ञतामहं प्राप्तः परितुष्टे च शङ्करे।।
विष्णुः शक्तित्वमालभते........................। (एकाम्र पु. 5/17-18)

ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र आदि देवता, परशुराम, भीम तथा रामादि ने भगवान् शिव की उपासना से मनोवांछित फल पाये हैं। इन लोगों के लिंगपूजन आदि का वर्णन इस पुराण में प्राप्त होता है। उदाहरण के लिये -

सर्वाच्र्चितस्वचरणाम्बुजयुग्मकाय...................।

ब्रह्मेन्द्रविष्णुचरणाम्बुज सेविताय................।। (एकाम्र पु. 18/69)

अर्थात्-ब्रह्मा, इन्द्र, विष्णु आदि सभी के द्वारा भगवान् शिव के चरणों की सेवा होती है।

पुन :- **ब्रह्मा विष्णुसशक्रद्यैर्मुनिभिर्ब्रह्मवादिभिः।**

अर्च्चितो भावशुद्धेन कृत्तिवासा जगद्गुरुः।। (एकाम्र पु. 56/18)

अर्थात्-जगदगुरु भगवान् शिव की शुद्ध भाव से अर्चना ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, मुनि तथा ब्रह्मवादी लोग करते हैं।

(1) शिवनाममहिमा

भक्ति साहित्य में भगवान् के नाम की विशेष महिमा गायी गयी है। इस पुराण में भी भगवान् शिव के नाम की महिमा बतायी गयी है। भगवान् शिव के नाम की महिमा के सन्दर्भ में बताया गया है कि उनका स्मरण करने से पापों के ढेर उसी प्रकार चूर-चूर हो जाते हैं जिस प्रकार पर्वत वज्र गिरने से हो जाता है। रुद्रदेव के नामोच्चारणमात्र से व्यक्ति के सभी प्रकार के अनिष्ट नष्ट हो जाते हैं।

स्मरणादेव रुद्रस्य पापसंघातपञ्जरम्।

शतधा भेदमायाति गिरिर्वज्रहतो यथा।।

नामोच्चारणमात्रेण रुद्रेति पुरुषस्य तु।

नश्यन्ति सकला दुष्टाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।। (एकाम्र पु. 5/44, 47)

जो लोग अपने कुकर्मों का स्मरणकर पश्चात्ताप की अग्नि में जल रहे हैं उससे निष्कृति का श्रेष्ठ उपाय शिव का स्मरण(ब्रह्माजी द्वारा) बताया गया है।

यः स्मृत्वा तु निजं कर्म पश्चात्तापेन दह्यते।

तस्यैकां निष्कृतिं वक्ष्ये शिवसंस्मरणं परम्।। (एकाम्र पु. 6/64)

भगवान् शिव मंगल के धाम हैं तथा उनका स्मरणमात्र सभी प्रकार के पापों का नाश कर देता है।

श्रीमान् माङ्गल्यनिलय स्मृतमात्राघनाशन। (एकाम्र पु. 33/46)

इस पुराण में एक स्थलपर यहाँतक कहा गया है कि इस धरती पर जो मनुष्य भगवान् शिव के नाम का कीर्तन करता है उसके फलों को शेषनाग भी बताने में असमर्थ हैं। भगवान् शिव के कीर्तनमात्र से ऐसा मनुष्य भी मुक्ति को प्राप्त कर लेता है जिसने न तो कोई तीर्थ, न तो यज्ञ, न तो दान और न ही व्रत किया हो।

कृत्तिवासेति यो नाम कीर्त्तयेत् भुवि मानवः।

तस्य यत् तत् फलं वक्तुं शेषदेवो न शक्यते।।

विना तीर्थैर्विनायज्ञैर्विनादानैर्विना व्रतैः।

मुक्तिं प्रयान्ति मनुजाः कृत्तिवासेति कीर्त्तनात्।। (एकाम्र पु. 42/71-72)

संसार रूपी दुःख का (नाश करनेवाले) कुठार भगवान् शिव का भजन करो। वह (शिवभजन) संसारदुःख की औषधि है, उस अमृत का पान करो ताकि मुक्ति प्राप्त हो सके। जिह्वा से निरन्तर शिव, नीलकण्ठ, शंकर, हर, पार्वतीपति आदि का उच्चारण करते रहो। शिव एवं शम्भु का निरन्तर स्मरण करते रहो।

निरामयं तदमृतं पिव संसारभेषजम्।
भजस्व च विरूपाक्षं भवदुःखकुठारकम्।।
शिवेति नीलकण्ठेति शङ्करेति हरेति च।
पार्वतीप्राणनाथेति वद जिह्वे निरन्तरम्।।
शिवः शम्भुः शिवः शम्भुः शम्भुः शम्भुः शिवः शिवः।
इति व्याहरतो नित्यं..।। (एकाम्र पु. 44/41, 43-44)

एक स्थलपर प्रणव को परमब्रह्म बताते हुए उसे भगवान् शिव से अभिन्न माना गया है। वहींपर कहा गया है कि उसके उच्चारण से विद्वान् ब्राह्मण ब्रह्म को प्राप्त कर लेते हैं।

प्रणवः परमं ब्रह्म वेदादौ समजायते।।
यदुच्चार्य पुमान् विप्राः परं ब्रह्माधिगच्छति। (एकाम्र पु. 47/91-92)

(2) एकाम्रकक्षेत्रस्थ शैवतीर्थ

यह पुराण मूलतः एकाम्रक्षेत्र तथा उस क्षेत्र में स्थित अनेक तीर्थों के माहात्म्य को बतलाने के लिये लिखा गया है। उड़ीसा की वर्तमान राजधानी भुवनेश्वर के आस-पास के क्षेत्र को एकाम्रक्षेत्र कहा गया है। ब्रह्म पुराण के अनुसार एकाम्रक नाम से विख्यात क्षेत्र वाराणासी के समान कोटिलिंगों से युक्त एवं शुभ है। उसमें आठ तीर्थ हैं। पूर्व कल्प में वहाँ एक आम का वृक्ष था। उसी के नाम से वह एकाम्रकक्षेत्र के रूप में विख्यात हुआ।

लिङ्गकोटिसमायुक्तं वाराणसीसमं शुभम्।
एकाम्रकेति विख्यातं तीर्थाष्टकसमन्वितम्।।
एकाम्रवृक्षस्तत्राऽऽसीत्पुरा कल्पे द्विजोत्तमाः।
नाम्ना तस्यैव तत्क्षेत्रम् एकाम्रकम् इति श्रुतम्।। (ब्रह्म पु. 41/11-12)

सगुणोंपासना में तीर्थ-यात्रा का बहुत महत्त्व बताया गया है। अतः अपने श्रेय एवं प्रेय की सिद्धि के लिये तीर्थों का सेवन करना चाहिये। एकाम्रकक्षेत्र में करोड़ों शिवलिंग स्थित हैं तथा वहाँ पर अनेकों तीर्थ अवस्थित हैं, जिनका सेवन भोग एवं मोक्ष प्रदान करनेवाले हैं। भगवान् शिव सनत्कुमारजी से कहते हैं कि एकाम्रकवन में मेरे लिंग के स्पर्श के प्रभाव से निश्चितरूप से मुक्ति प्राप्त होती है यह एक अटल सत्य है।

सत्यं सत्यं पुनः सत्यमेकाम्रकवने मम।

लिङ्गस्पर्शप्रभावेन मुक्तिं प्राप्नोति निश्चितम्।। (एकाम्र पु. 2/97)

भूमिलोक जैसा धर्म स्वर्ग में नहीं देखा जाता क्योंकि यहाँपर करोड़ों शिवलिंगों के माध्यम से साक्षात् शिव स्वयं प्रकट हुए हैं (एकाम्र पु. 6/68-69)। ब्रह्माजी के यह पूछनेपर कि मुक्ति के लिये कौन सा स्थान विशेष फलदायक है? भगवान् शिव कहते हैं कि हेमकूट पर्वतस्थित लिंग चारों दिशाओं में अपने तेज से प्रज्वलित हो रहा है तथा उसके चारों ओर करोड़ों लिंग भूतलपर स्थित हैं, उस एकाम्रकवन प्रदेश में मैं विराजमान रहता हूँ। जो मुझे वहाँ स्थित देखता है, वह परमगति को प्राप्त करता है। उस लिंग के स्पर्शमात्र से महापातकी भी मुक्त हो जाते हैं।

....

एकाम्रकवनोद्देशे तस्मिन् सन्निहितो ह्यहम्।
यो मां पश्यति तत्रस्थं स याति परमां गतिम्।।
स्पृष्टमात्राद्भवेन्मुक्तिर्महापातकिनामपि।। (एकाम्र पु. 11/52-53)

एकाम्रकवन के लिंग महासिद्धिदायक हैं (एकाम्र पु. 12/8)। उन लिंगों के दर्शनमात्र से राजसूय एवं अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है।

राजसूयाश्वमेधाभ्यां या गतिः समुदाहृता।
सा गतिर्दृष्टिमात्रेण एकाम्रकवने शिवम्।। (एकाम्र पु. 12/11)

आगे कहा गया है कि- सभी शास्त्रों ने पुनः-पुनः विचार कर कहा है कि भगवान् शिव के इस लिंग (एकाम्रकवनस्थ) के समान न अन्य कोई हुआ है और न अन्य कोई भविष्य में होगा। पृथ्वीपर जितने भी तीर्थ और पुण्य क्षेत्र हैं वे सभी इस चिद्स्वरूप लिंग की सोलहवीं कला के भी बराबर नहीं हैं। इस लिंग को वेदान्त में परमब्रह्म कहा जाता है, इसकी पूजा (तथा दर्शन) वसु आदि द्वारा सदैव की जाती है।

कथ्यते सर्वशास्त्राणि विचार्य च पुनः पुनः।
कृत्तिवासः समं लिङ्गं न भूतं न भविष्यति।।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि पुण्याम्यायतनानि च।
चिद्रूपस्यास्य लिङ्गस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्।
एतल्लिङ्गं परं ब्रह्म वेदान्ते परिकीर्त्त्यते।
दर्शनेनास्य पूजन्ति वासवादि दिवौकसः।। (एकाम्र पु. 12/15-17)

एकाम्रकवन में लिंगरूपी सदाशिव नित्य विराजते हैं (12/27)। इस क्षेत्र में एक करोड़ लिंग व्याप्त हैं (12/32)। इन लिंगों के नमस्कार, पूजन एवं प्रदक्षिणा से व्यक्ति तत्काल ही भगवान् शिव के प्रसाद से अपने सात जन्मों के किये मानस, वाचिक एवं कार्मिक पापों से छूट जाता है। और वह कृतकृत्य हो जाता है।

कृत्तिवासं नमस्कृत्य कृतकृत्यो भवेन्नरः।
सप्तजन्मकृतं पापं कर्मणा मनसा गिरा।।
तत्क्षणात् क्षालयेत् प्राज्ञः कृत्तिवासप्रसादतः।
प्रदक्षिणं नमस्कारं पूजनम् कृत्तिवाससः।। (एकाम्र पु. 12/36-37)

भगवान् शिव ब्रह्माजी से कहते हैं कि मेरे एकाम्रकवन में जो मरणधर्मा अपना शरीर छोड़ता है वह मेरे साथ कैलास में आनंद से रहता है। महापातकी भी मेरे लिंग के स्पर्शमात्र से परमगति को प्राप्त कर लेते हैं। जल, मूल एवं फल का आहार करनेवाले, पक्ष एवं मासतक का उपवास करनेवाले, सदा यम व संयम का पालन तथा एकान्त में निवास करनेवाले, दिव्य वर्षों की गणना से सैकड़ों वर्षतक हरिध्यानपरायण, पापरहित, वीतरागी योगी की गति तथा अनेक जन्मों में सिद्ध होनेवाले पद की प्राप्ति मेरे(लिंग के) दर्शन के क्षण ही हो जाती है।

ममैकाम्रवने मर्त्त्या ये त्यजन्ति कलेवरम्।
मया सह प्रमोदन्ते ते कैलासे नरोत्तमाः।।
महापातकसंयुक्ताः सर्वभूतनिषेधकाः।
मल्लिङ्गस्पर्शनादेव ते यान्ति परमां गतिम्।।
जलमूलफलाहारैः पक्षमासोपवासकैः।
यमसंयमसंयुक्तैरेकान्तनिरतैः सदा।।
हरिध्यानपरैर्युक्तैर्दिव्यवर्षशताधिकैः।
यां गतिं योगिनो यान्ति वीतरागा विकल्मषाः।।
अनेकजन्मसंसिद्ध्या दुर्लभं पदमाहितम्।
तत्क्षणात्तत्पदं यान्ति दर्शनान्मम सुव्रत!।। (एकाम्र पु. 14/12, 15-18)

भगवान् शिव पुनः कहते हैं कि मेरा यह उत्तम लिंग साक्षात् परमब्रह्म है जो सभी पापों का शमन करनेवाला तथा मोक्षरूपी फल को देनेवाला है। एकाम्रक्षेत्र में स्थित सभी लिंगों में त्रिभुवनेश्वर मुख्य है। यहाँपर दर्शनमात्र से ही महापातकों का नाश हो जाता है। इस क्षेत्र में स्थित मेरे लिंगों का जो श्रद्धापूर्वक स्तवन नहीं करते उन्हें मैं नरकों में गिराता हूँ। कृतयुग में व्यक्ति (लिंग के) दर्शनमात्र से मुक्त हो जाता है, त्रेता में स्पर्श, द्वापर में पूजा तथा कलि में शुश्रूषा से सिद्धि प्राप्त होती है।

साक्षाच्चैव परं ब्रह्म ममेदं लिङ्गमुत्तमम्।
सर्वपापप्रशमनं मोक्षैकफलदायकम्।।
सर्वेषां चैव लिङ्गानां मुख्यं त्रिभुवनेश्वरम्।
ममात्र दर्शनं यत्तु महापातकनाशनम्।।
एकाम्रे मम ये लिङ्गं श्रद्धया न स्तुवन्ति च।

तानहं पातयिष्यामि नरकेषु महीक्षयात्।।
कृते दर्शनमात्रेण मोक्षमिच्छन्ति मे नराः।
त्रेतायां स्पर्शनात् सिद्धिर्मुक्तिदोऽहं नृणां किल।।
द्वापरे पूजितो नृभ्यो दास्याम्यभिमतं फलम्।
प्रसादमधिगच्छामि कलौ शुश्रूषणाद्ध्रुवम्।।

(एकाम्र पु. 14/21, 30-31, 36-37)

एकाम्रक्षेत्र तथा काशी, सेतु, ॐकारेश्वर आदि ज्योतिर्लिंगों में भगवान् शिव सदा निवास करते हैं(14/28-29)। तथापि सभी लोकों से यहाँ(एकाम्रक्षेत्र में) लाख गुणा पुण्य प्राप्त होता है।

सर्वेषां चैव लोकानामत्र पुण्यं पितामह।
अन्यतः शतसाहस्त्र्यं गुणितं साधितं स्मृतम्।। (एकाम्र पु. 14/47)

ब्रह्माजी पार्वती से कहते हैं कि इस क्षेत्र में भगवान् शिव की अर्चना करनेवाले सुगति को प्राप्त कर देवताओं के साथ आनंद करते हैं। एक बार श्रीहरि ने देवताओं के साथ इस क्षेत्र में भगवान् शिव की पूजा की थी। यहाँपर मैं, श्रीहरि, सूर्यदेव आदि ने लिंग स्थापितकर पूजन किया था। श्रीहरि आदि देवों के पूजन संबंधी वृत्तान्त की चर्चा विस्तार से ब्रह्माजी ने इस पुराण के अठारहवें अध्याय में की है।

लिङ्गं च पूजयामास विष्णुः शत्रुनिसूदनः।
गन्धपुष्पैरलङ्कारैर्भक्त्या परमयाम्बिके!।। (एकाम्र पु. 18/47)

अर्थात्-शत्रुओं का नाश करनेवाले भगवान् विष्णु ने गंध, पुष्प एवं अलंकारों द्वारा भक्ति पूर्वक लिंग की पूजा की। फलस्वरूप भगवान् शिव प्रकट हो गये। तदनन्तर देवताओं तथा भगवान् विष्णु ने पृथक्-पृथक् स्तोत्रों का पाठ किया। विष्णुजी के स्त्रोत से भगवान् शिव प्रसन्न हो वर देने के लिये प्रस्तुत हुए । विष्णुजी ने वर में यह माँगा कि आप इस लिंग में सदा निवास करें तथा जो भक्तिपूर्वक इसकी उपासना करे उसे मनचाहा वर प्रदान करें। भगवान् शिव ने कहा कि तुम्हारे द्वारा प्रतिष्ठित यह लिंग सिद्धेश्वर नाम से जगत् में प्रसिद्ध होगा तथा इसका आश्रय लेकर मुनि लोग सिद्धि को प्राप्त करते रहेंगे(18/84-85, 87-89, 94-95)। इस लिंग का नाश महाप्रलय होनेपर भी नहीं होता।

महाप्रलयकालेऽपि न नाशमधिगच्छति।। (एकाम्र पु. 18/103)

एकाम्रक्षेत्र में स्थित बिन्दुसरोवर के माहात्म्य को बतलाते हुए कहा गया है कि जो अपने शरीर को यहाँ छोड़ता है वह स्वर्ग को भी भेदकर अनामय ज्योतिर्लोक को जाता है तथा वहाँ से शिवलोक को जाकर शिवसायुज्य को प्राप्त करता है।

बिन्दुह्रदजले मर्त्या ये त्यजन्ति कलेवरम्।।

ते यान्ति त्रिदिवं भित्वा ज्योतिर्लोकमनामयम्।
ततः शिवपुरं गत्वा शिवसायुज्यमप्नुयुः।। (एकाम्र पु. 23/43-44)

जिस सनातन परब्रह्म का वेदान्त में गायन होता है, उसकी लिंग-मूर्ति एकाम्रकवन में स्थित है। उस श्रेष्ठ लिंग के नैवेद्य को सभी पापों के विनाश तथा भवसागर से मुक्ति प्राप्त करने के लिये देवगण ग्रहण करते हैं। उस लिंगराज का नैवेद्य महापापों का विनाश करनेवाला है। इसका सेवनकर सभी देवताओं ने अपने-अपने पद को प्राप्त किया है।

वेदान्ते गीयते यच्च परंब्रह्मं सनातनम्।
तदेव लिङ्गमूर्त्या च तिष्ठत्येकाम्रके वने।।
यस्य लिङ्गवरस्याङ्ग नैवेद्यं गृह्यते सुरैः।
सर्वपापविनाशाय विमुक्तयै भवसागरात्।।
नैवेद्यं लिङ्गराजस्य महापापविनाशनम्।
यद्भुक्त्वा ह्यमराः सर्वे स्वं स्वं पदमवाप्नुयुः।। (एकाम्र पु. 31/48, 50-51)

जगत् के कारण एकाम्रनाथ भगवान् शिव ने भक्तों पर दया करके स्वयं लिंगमूर्ति धारण किया है। काशी, सेतु, महेन्द्र आदि सभी पुण्य-क्षेत्रों को छोड़कर एकाम्र में निवास करते हैं(एकाम्र पु. 31/65-66)। एकाम्रकवन शिव का सनातन पुण्य धाम है जिसमें सर्वत्र शिवलिंग व्याप्त हैं(एकाम्र पु. 31/70-71)।

भुवनेश्वरलिंग भी लिंग न होकर साक्षात् परब्रह्म का स्वरूप है, इसका नैवेद्यग्रहण महान् यज्ञों के समान फल देनेवाला है(एकाम्र पु. 42/70)। हेमकूट की चोटीपर स्थित भगवान् शिव का भजन करनेवाले का कभी पराभव नहीं होता है। उसी का जीवन प्रशंसनीय है तथा सफल है जो एकाम्रकवन में स्थित हो शिव के भजन में रत है। जो समाहित होकर उसकी यात्रा एवं परिक्रमा करता है वह अपने महापापों को धो डालता है। इस क्षेत्र की तीन प्रदक्षिणा करने से एक ही दिन में तीन करोड़ जन्मों के पापों से छुटकारा हो जाता है। दाहिने या बायें किसी भी तरफ से की गयी प्रदक्षिणा का समान फल प्राप्त होता है ऐसा मनीषिगण कहते हैं।

..।
ये भजन्ति विरूपाक्षं न ते यान्ति पराभवम।।
श्लाघ्यं जन्म च तस्यैव सफलं तस्य जीवनम्।
यश्च एकाम्रके तस्मिन् कृत्तिवासोऽर्च्चने रतः।।
प्रदक्षिणं पर्यटनं यः करोति समाहितः।
यः करोति महापापं क्षालयेत् तत् न संशयः।।
अस्मिन् क्षेत्रवरे रम्ये यैः कृतं त्रिः प्रदक्षिणम्।

त्रिकोटिजन्मजात् पापाद् दिनेनैकेन मुच्यते।।
सव्यापसव्यं येनाद्रिं क्रियते च प्रदक्षिणम्।
तत् फलं समवाप्नोति प्रवदन्ति मनीषिणः।। (एकाम्र पु. 56/11-15)

एकाम्रक्षेत्र में स्थित भीमेश्वर लिंग की पूजा सभी पापों का नाश कर मंगल प्रदान करती है (एकाम्र पु. 61/49)। अश्वमेध यज्ञ के दौरान भगवान् राम ने एकाम्रक्षेत्र में जाकर लिंगार्चन किया। फलस्वरूप भगवान् शिव प्रकट हो श्रीराम से कहते हैं कि सभी तीर्थों में श्रेष्ठ, सभी जीवों को पवित्र करनेवाला तथा त्रिलोक में विख्यात यह तीर्थ रामेश्वर कहा जायगा। इस तीर्थ में मैं साक्षात् निवास करूँगा तथा भक्तिमानों को सिद्धि प्रदान करूँगा।

सर्वतीर्थवरः श्रीमान् पावनं सर्वदेहिनाम्।
रामेश्वर इति ख्यातस्त्रिषु लोके भविष्यति।।
सदा सिद्धमिदं तीर्थं यत्र सन्निहितो ह्यहम्।
आदास्यामि स्वयं पूजां सदा भक्तिमतां नृणाम्।। (एकाम्र पु. 53/39-40)

(3) भगवान् शिवसंबंधी स्तोत्र

इस पुराण में भगवान् शिव से संबंधित कुछ प्रमुख स्तोत्रों के हवाले आये हैं जिनमें से (ब्रह्म-पुत्र)तुण्डि कृत शिव-सहस्रनाम प्रमुख है। इसमें इस स्तोत्र का पूरा पाठ न देकर मात्र इस स्तोत्र के आरंभ बिन्दु का ही संकेत किया गया है। परन्तु इस स्तोत्र की महिमा को बहुत ही विस्तार से समझाया गया है। यह स्तोत्र महाभारत में पाया जाता है जिसका पूरा पाठ इसी पुस्तक में अन्यत्र दिया गया है।

कहा गया है कि पुराणोक्त स्तुतियों, अथर्वशिरस् तथा शतरुद्रि से भगवान् शिव प्रसन्न होते हैं (एकाम्र पु. 32-33) परन्तु तुण्डिकृत शिव-सहस्रनाम उनकी प्रसन्नता का विशेष साधन है। इस सहस्रनाम का पाठ ब्रह्म-लोक में होता था जिसे तुण्डि ने सुनकर उसे ग्रहण कर लिया तथा उसे पृथ्वीलोक पर उतारा। इसीलिये उसे तुण्डिकृत कहा जाता है (32/42-43)। शुक्राचार्य हिरण्यकशिपु को इस सहस्रनाम का उपदेश करते समय पहले इसके माहात्म्य को बताते हैं। वे कहते हैं कि यह पुण्यमय सहस्रनाम भगवान् शिव को सदा ही प्रीतिकर है। जिस प्रकार शिव को गौरी तथा पुत्र षण्मुख प्रिय हैं तथा जिस प्रकार अविमुक्तक्षेत्र प्रिय है उसी प्रकार उन्हें यह सहस्रनाम प्रिय है। जितना प्रिय यह सहस्रनाम है उतना प्रिय उन्हें न तो गंगा, न तो श्रीहरि और न ही योग है। वे अन्य सैकड़ों व्रतों से प्रसन्न न होकर इस सहस्रनाम से शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं।

पुण्यं नाम सहस्रं हि शम्भोः प्रीतिकरं सदा।
..।।
यथा गौरी प्रिया शम्भोर्यथा पुत्रेषु षण्मुखः।

क्षेत्रं यथाऽविमुक्तं हि तथा नाम सहस्रकम्।।
न तथा च प्रिया गङ्गा न तथा च प्रियो हरिः।
न तथा च प्रियो योगो यथा नाम सहस्रकम्।।
अतीव प्रीतिदं नाम सहस्रं शङ्करस्य च।
तेनैव तुष्यते शम्भूर्नान्यैर्व्रतशतैरपि।। (एकाम्र पु. 32/44-47)

एकाम्रकक्षेत्र में इस सहस्रनाम से शिव-पूजन करने से मनुष्य अपने मनोरथों को पूरा कर लेता है(एका. पु. 32/49)।

ब्रह्माजी ने भगवान् शिव की स्तुति में एक अष्टक की रचना की है जिसका उल्लेख इस पुराण(39/33-40) में हुआ है। इसका शिव के निकट भक्तिपूर्वक पाठ करने से व्यक्ति के पाप सहसा नष्ट हो जाते हैं तथा उसे शिव-सायुज्य की प्राप्ति हो जाती है। यह स्तोत्र शोक का नाशक, विजयप्रद, सभी कार्यों में सफलता प्रदान करनेवाला है।

किसी समय इन्द्र सहित सभी देवों ने एकाम्रकक्षेत्र में सहस्रनाम के पाठ तथा अन्य कृत्यों से भगवान् शिव को प्रसन्न किया तथा उनकी स्तुति की। यह स्तुति इस पुराण में(33/17-46) मिलती है। इस स्तुति का भक्तिपूर्वक जितेन्द्रिय रहकर पाठ करने पर छ:ह महीने के अन्दर मनोकामनायें पूर्ण हो जाती हैं(एका. पु. 33/48)।

इस पुराण का चौथा अध्याय ब्रह्मगीता के नाम से जाना जाता है। इसमें कुल 118 श्लोक हैं। इसके वक्ता ब्रह्माजी तथा श्रोता देवी पार्वती हैं। इसमें भगवान् शिव की महिमा का कथन हुआ है। इस गीता के माहात्म्य को बतलाते हुए कहा गया है कि इसे समाहित होकर भक्तिपूर्वक पढ़ने वा सुनने से छ:ह माह के अन्दर सिद्धि प्राप्त हो जाती है। इसके नियमित पाठ से सभी प्रकार की लौकिक एवं पारलौकिक कामनायें पूरी हो जाती हैं। चतुर्दशी के दिन भगवान् शिव के समक्ष इसके पाठ से व्यक्ति को शिवसायुज्य की प्राप्ति हो जाती है(एका. पु. 4/118)।

(4) शिवोपासना संबंधी कुछ अन्य बातें

इस पुराण में भगवान् शिव की महिमा के प्रसंग में एक स्थलपर षडक्षर(ॐ **नमः शिवाय**) मन्त्र का उल्लेख हुआ है। वहाँपर(एका. पु. 18/71) उसे मन्त्रों में श्रेष्ठ स्वीकार किया गया है। भगवान् शिव के सगुण विग्रह का यह सर्वश्रेष्ठ मन्त्र है। इसी प्रकार प्रणव(ॐ**कार**) को भगवान् शिव के निर्गुणरूप का सर्वश्रेष्ठ मन्त्र माना गया है। इस मन्त्र का भी उल्लेख इस पुराण(47/91-92) में हुआ है। वहाँपर कहा गया है कि इसके उच्चारण से व्यक्ति परब्रह्म को प्राप्त कर लेता है।

शिवरात्रिव्रत की महिमा बताते हुए कहा गया है कि इसे करके चाण्डाल भी भगवान् शिव को प्राप्त कर लेता है। इसे करने से सभी पाप समाप्त हो जाते हैं तथा सभी प्रकार के पुण्यों की वृद्धि हो जाती है।

शिवरात्रिव्रतं कृत्वा चाण्डालोऽपि व्रजेच्छिवम्।
सर्वपापघ्नमतुलं सर्वपुण्यविबर्द्धनम्।। (एकाम्र पु. 66/40)

इस दिन शिव की पूजा रात्रि के प्रत्येक प्रहर में दुग्ध, दधि, घृत तथा मधु द्वारा करनी चाहिये। पूजासमाप्ति पर महास्नान कराना चाहिये। दूधद्वारा तत्पुरुष-मुख को, दधिद्वारा अघोर-मुख को, घृतद्वारा सद्योजात तथा मधुद्वारा वामदेव-मुख को स्नान कराना चाहिये। इसके पश्चात् लिंग की पूजा करनी चाहिये। रात्रि के प्रत्येक प्रहर में 32 उपचारों द्वारा महेश्वर की पूजा करें तथा बिल्वपत्रों की वृष्टि करें। शिवरात्रि की पूजा का दर्शन भी पूजा के समान ही फलदायी होता है।(एकाम्र पु. 66/48)

जो लोग भगवान् विष्णु की उपासना करते हैं उनके लिये एक चेतावनी इस पुराण में दी गयी है। यहाँ कहा गया है कि अगर कलिकाल में कोई वैष्णवीवृत्ति का आश्रय लेकर भगवान् शिव की निन्दा करता है तो उसका विनाश हो जाता है तथा वह निश्चितरूप से नरक को जाता है(एकाम्र पु. 6/30-31)।

..।।
कलौ तु वैष्णवीभूत्वा शिवनिन्दा-परायणाः।
भविष्यन्ति नराः सत्यं नरकाय न संशयः।। (एकाम्र पु. 6/31)

भगवान् शिव एवं विष्णु

अन्य ग्रन्थों की भाँति इस पुराण में भी भगवान् शिव एवं विष्णु की तात्त्विक एकता का प्रतिपादन हुआ है। भगवान् शिव सर्वशक्तिमान हैं तथा सभी की शक्ति हैं। इस कारण शिवा भी भगवान् शिव की शक्ति हैं। धारक-धार्य भाव से शिव एवं शिवा में अभेद है। ब्रह्माजी पार्वती से कहते हैं कि देवि! तुम विष्णु भाव[1] से युक्त हो और महेश्वर तुमसे भावित हैं(अतः शिव एवं विष्णु में अभेद है)। ज्ञान-बुद्धि से रहित मूढ़ लोग(शिव एवं विष्णु में या शिव एवं शक्ति में) भेद करते हैं। शिव एवं विष्णु में कोई भेद नहीं है-यह सनातन धर्म है। इस धर्म के पालन द्वारा व्यक्ति को मुक्ति प्राप्त हो जाती है। अर्थात् शिव-विष्णु के अभेद का ज्ञान, प्रकृति-पुरुष के अथवा शिव-शिवा के अभेद का ज्ञान मुक्ति को जन्म देता है।

यः शिवः सर्वशक्तिः स या शक्तिः स महेश्वरः।
धार्यधारकभावौ तावनन्तरगताविमौ।।
त्वं देवि! विष्णुभावेन त्वसौ देवो महेश्वरः।
मूढः भेदं प्रकुर्वन्ति ज्ञानबुद्धिबहिष्कृताः।।

1. अन्य पुराणों (यथा लिंग) में भी प्रकृति या शिवा को विष्णुरूप स्वीकार किया गया है। इसका उल्लेख पहले के अध्यायों में किया जा चुका है। प्रकृति ही मूर्तिमान होकर विष्णुरूप में अवस्थित है। सृष्टि के प्रारंभ में ही ऐसा घटित हो गया था। इसीलिये विष्णु को मायापति भी कह दिया जाता है क्योंकि वे स्वयं ही मायारूप हैं।

न विष्णुशिवयोर्भेद एष धर्मः सनातनः।
परिपाल्य इमं धर्मं नरो मुक्तिमवाप्नुयात्।। (एकाम्र पु. 4/33-35)

ब्रह्माजी ने शिव की स्तुति करते हुए एक स्थलपर उन्हें 'ब्रह्म-विष्णु-शिवात्मक' कहा है(एका. पु. 4/72)। जिसका भाव यह है कि निर्गुण भगवान् सदाशिव ही ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव(रुद्र) रूपों में अपने को प्रकट करते हैं। एक ही सत्ता तीन भिन्न-भिन्न आकृतियों को धारण करती है। इस दृष्टि से तीनों देवों में तात्त्विक अभिन्नता है।

विद्वान् लोग शिव एवं विष्णु में भेद नहीं करते। वास्तव में एक ही शरीर दो रूपों में प्रकट हो रहा है। अर्द्धनारीश्वर का नारी भाग विष्णुदेव तथा पुरुष भाग स्वयं भगवान् शिव का द्योतक है। ब्रह्माजी पार्वती से कहते हैं कि हे देवि! इन दोनों में कोई भेद मत समझो, जो महेश्वर हैं वही विष्णु हैं। जो मूढ़ हैं वे ही भेद करते हैं, वे पापी तथा निर्लज्ज हैं।

न भेदश्चानयोरस्ति प्रवदन्ति विचक्षणाः।
तेन विष्णुः शिवश्चैव एकदेहो द्विधाकृतः।।
अर्द्धनारीश्वरो देवो या नारी स जनार्दनः।
न विदुर्देवि! भेदं वो यो विष्णुः स महेश्वरः।।
भेदं यः कुरुते मूढः स पापी निरपत्रपः। (एकाम्र पु. 5/23-25)

सूर्यदेव को भगवान् शिव की अष्टमूर्तियों में से एक माना गया है। इस पुराण में एक स्थल पर(10/11) सूर्यदेव की विष्णु एवं शिव से अभिन्नता बतायी गयी है तथा शिव की सूर्यदेव से। इस प्रकार शिव, विष्णु तथा आदित्य ये तीनों ही तात्त्विकरूप से एक ही हैं। अन्य ग्रन्थों की भाँति यहाँ भी स्पष्टरूप से कहा गया है कि भगवान् शिव ही(ब्रह्मारूप से) सृष्टि करनेवाले, विष्णुरूप से पालन तथा रुद्ररूप से संहार करनेवाले हैं(एका. पु. 13/48 इत्यादि)। अतः इस तरह के उद्धरणों में भी त्रिदेवों की एकता का स्पष्टरूप से प्रतिपादन किया गया है।

एक स्थलपर स्वयं भगवान् शिव ब्रह्माजी से कहते हैं कि हमारे और विष्णु के बीच कोई भेद नहीं है और न ही आप और मेरे में कोई भेद है।

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं जगद्योने पितामह!।
भवतो मम विष्णोश्च नास्ति भेदः शृणुष्व च।।
निर्भेदावयवा वां हि भवानहमतो यतः। (एकाम्र पु. 14/41, 42)

एक प्रसंग में भगवान् शिव एवं विष्णु दोनों ही एक दूसरे के प्रति कह रहे हैं कि हम दोनों में कोई अन्तर नहीं है(एका. पु. 18/84, 86)। भगवान् शिव मुनियों तथा देवों आदि द्वारा मुक्तिप्रदायक ज्ञान के बारे में प्रश्न किये जानेपर उत्तर देते हुए एक स्थलपर कहते हैं कि जो हम तीनों(देवों) में भेद करता है वह नरक को प्राप्त करता है। जो विष्णु हैं वही ब्रह्मा हैं तथा जो ब्रह्मा हैं वही महेश्वर

हैं। महान् ईश्वर ही यह आत्मा तथा ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश्वर है। ब्रह्मा तथा विष्णु एक एवं निरञ्जन हैं उन दोनों से परे परमेश्वर है। वह तीनों गुणों से परे है। उस गुणातीत ईश्वर से परे सदाशिव हैं जिन्हें परमब्रह्म कहा जाता है।

नरकं प्रतिपद्येत अस्माकं भेदकृत् पुमान्।
यस्तु विष्णुः स वै ब्रह्मा ब्रह्मा चैव महेश्वरः।।
महानीश्वर एवात्मा विष्णुब्रह्ममहेश्वरः।
ब्रह्माविष्णु स एवैको निरञ्जन उदाहृतः।
तस्मात् परतरो देवो विख्यातः परमेश्वरः।।
स बाह्यस्त्रिगुणेभ्यस्तु ईश्वरः परमः स्वराट्।
तस्मात् सदाशिवो देवः परं ब्रह्म स उच्यते।। (एकाम्र पु. 47/94, 96-98)

शिव ही ब्रह्मा हैं, विष्णु हैं तथा वे ही ब्रह्मा-विष्णु-शिवात्मक हैं। उस प्रभु की ही तीन मूर्तियाँ तीनों गुणों के कारण हैं। एक ही सत्ता सृष्टि, स्थिति एवं संहार के लिये तीन शरीर या रूप धारण करती है। और वह सत्ता सदाशिव है।

शिवो ब्रह्मा शिवो विष्णु ब्रह्मविष्णुशिवात्मकौ।
त्रयस्त्रिगुणसम्पन्ना स्त्रयीमूर्त्तिभृतः प्रभुः।।
एकोऽपि त्रितयं याति सर्गस्थित्यन्तकारणात्। (एकाम्र पु. 59/50-51)

उपसंहार

मूलतः उड़िया लिपि मे लिखे गये इस उपपुराण में एकाम्रक्षेत्र(भुवनेश्वर के आस-पास का क्षेत्र) के माहात्म्य की चर्चा विशेषरूप से की गयी है। इसमें लगभग 6000 श्लोक तथा 70 अध्याय हैं।

इस पुराण में भगवान् शिव को परमतत्त्व स्वीकार करते हुए उसके सगुण एवं निर्गुण दोनों पक्षों की चर्चा की गयी है। उन्हें निर्गुण, निराकार, निराभास, निरञ्जन, एक, परमतत्त्व, परमब्रह्म, स्वयंभू, निर्विकार, चिदानंद, परमानंद, ॐकारस्वरूप, इन्द्रियातीत, मन-वाणी से परे, अजन्मा, सुर, नर, मुनि, असुर तथा ब्रह्मा-विष्णु द्वारा अज्ञेय, सनातन, पुराण-पुरुष, सृष्टि, स्थिति तथा संहार का कारण, ब्रह्मा, विष्णु एवं रुद्रस्वरूप, पंचमुखी, जटाधारी, शशीकला से युक्त, त्रिलोचन, चिताभस्म से विभूषित, व्याघ्र एवं गज चर्मधारी, नागेन्द्र को धारण करनेवाले, पिनाक, शूल, यष्टि, वज्र आदि आयुधों को धारण करनेवाले, स्फटिक के समान निर्मल, कर्पूर के समान गौरवर्णवाले, अतिकृपालु, तरुण शरीरवाले, भूतपति, पार्वती को आधे अंग में धारण करनेवाले, तीनों भुवनों का मंगल करनेवाले, सभी प्रकार के भोग एवं मोक्ष प्रदान करनेवाले, सर्वश्रेष्ठ देवता, अव्यय, अनन्त, असंख्य, सभी गुणों के आधार, गुणातीत, सांख्य-योगस्वरूप, विभु, विश्वेश्वर, भक्तवत्सल, मूर्त एवं अमूर्त, देव, असुर, मनुष्य, मुनि, गन्धर्व आदि सभी द्वारा पूज्य, सर्वज्ञानमय, वरदाता, अप्रमेय, अपार, अयोनिज, जन्म, मृत्यु, तथा जरा से रहित, दिगम्बर, पशुपति, रुद्राक्षमालाधारी, यज्ञ एवं वषट्कार स्वरूप, द्वन्द्व एवं मोह

को शान्त करनेवाले, सबके शरणस्थल, योगियों के ध्येय, निरपेक्ष, लोकसाक्षी, नीलकण्ठ, सभी नामों एवं रूपों को धारण करनेवाले, अमृतदायक, ध्रुव, दिव्य-चैतन्य, निर्विकार, ज्ञानार्णव, परम ज्योति, भक्ति प्रिय तथा ज्ञानगम्य आदि विशेषणों से विभूषित किया गया है। इन विशेषणों में भगवान् शिव के सगुण एवं निर्गुण दोनों रूपों की झलक प्राप्त होती है।

भगवान् शिव चारों पुरुषार्थों को प्रदान करनेवाले, अति कृपालु, भक्तवत्सल, जगत् के आनंद को बढ़ानेवाले, दु:खियों को शरण देनेवाले, शीघ्र प्रसन्न होनेवाले तथा सर्वश्रेष्ठ देवता हैं। इस कारण से इनकी भक्ति करनी चाहिये। इनकी भक्ति से ब्रह्मा, विष्णु, सूर्य, इन्द्रादि देवता तथा अन्य मानव-दानव आदि सभी ने मनोवांछित वर पाये हैं।

एकाम्रक्षेत्र काशी के समान, करोड़ लिंगों से युक्त पवित्र शैव-स्थल है। यहाँ शरीर त्यागनेवाले को मुक्ति तथा स्नान-पूजन करनेवाले की सभी कामनायें पूरी होती हैं और उनके करोड़ों जन्म के पाप नष्ट हो जाते हैं। इस क्षेत्र में बिन्दु सरोवर, सिद्धेश्वर तथा रामेश्वर आदि तीर्थ हैं जो समानरूप से पापों को धोनेवाले तथा मोक्ष प्रदान करनेवाले हैं। इस क्षेत्र में भगवान् शिव सदैव विराजमान रहते हैं। इस क्षेत्र की तीन प्रदक्षिणा, चाहे वह किसी भी दिशा से की जाय, करने से एक ही दिन में तीन करोड़ जन्मों के पापों से छुटकारा हो जाता है।

इस पुराण में भगवान् शिव संबंधी कई स्तोत्रों का उल्लेख है, जिनके पाठ से सभी कामनायें पूरी होती हैं तथा अन्त में मुक्ति प्राप्त हो जाती है। इन सभी स्तोत्रों में तुण्डिकृत शिव-सहस्रनाम की काफी प्रशंसा की गयी है। इसे शिव का सर्वाधिक प्रिय स्तोत्र बताया गया है। पंचाक्षर मंत्र को सर्वश्रेष्ठ मन्त्र बताया गया है तथा ॐकार के जप से मोक्षप्राप्ति की बात कही गयी है।

इस पुराण में शिवरात्रिव्रत की चर्चा में बताया गया है कि इसके प्रभाव से चाण्डाल भी शिव को प्राप्त कर लेता है। यह व्रत पापों को नष्ट करनेवाला तथा मोक्ष प्रदान करनेवाला है। इस व्रत के अन्तर्गत रात्रि के प्रत्येक प्रहर में दुग्ध, दधि, घृत तथा मधु द्वारा शिव की पूजा तथा व्रतसमाप्ति पर इन्हीं के द्वारा अभिषेक करना चाहिये। तदनन्तर लिंग की पूजा करनी चाहिये। रात्रि के प्रत्येक प्रहर में 32 उपचारों द्वारा शिव-पूजन कर बिल्व-पत्रों की वृष्टि करनी चाहिये। शिवरात्रि की पूजा का दर्शन भी पूजा के समान फल देनेवाला कहा गया है।

अन्य ग्रन्थों की भाँति इस पुराण में भी शिव एवं विष्णु अथवा त्रिदेवों की तात्त्विक एकता का प्रतिपादन किया गया है। जो शिव एवं विष्णु में भेद करते हैं उन्हें मूर्ख, निर्लज्ज तथा नरकगामी कहा गया है। भगवान् शिव ही सर्ग, स्थिति तथा प्रलय के हेतु गुणों का आश्रय ले अपने को तीन रूपों-ब्रह्मा, विष्णु तथा रुद्र-में व्यक्त करते हैं। अत: इन तीनों में कोई भेद नहीं है। जो इनमें अभेद का दर्शन करता है वह मोक्ष को प्राप्त करता है। क्योंकि उसकी ज्ञानदृष्टि में सर्वत्र एक ही तत्त्व की व्यापकता नजर आती है(इस प्रकार की दृष्टि मोक्षप्राप्ति के लिये आवश्यक शर्त है)।

(प्रस्तुत निबंध डॉ. उपेन्द्र नाथ ढल द्वारा सम्पादित तथा 1986 में नाग पब्लिशर्स, दिल्ली द्वारा प्रकाशित 'एकाम्रपुराणम्' की प्रति पर आधारित है।)